

भारतीय तत्त्वविद्याना अजोड विद्वानने स्मरणांजलि

- विजयशीलचन्द्रसूरि

भारतीय दर्शनोना अधिकारी विद्वान पंडित दलसुखभाई मालवणियाना ता. २८.२.२०००ना रेज थयेल निधनथी आंतरराष्ट्रीय विद्वज्जगते एक प्रचंड प्रतिभा गुमावी छे. भारत अने गुजरात रंक बन्या छे, तो मूळथी ज विद्वानोनी बाबतमां कंगाल एवो जैन समाज हवे पूर्णपणे कंगाल बन्यो छे.

बर्षों अगाड आपणा अग्रणी विद्वान श्रावक पं. अगरचंद नाहटाए व्यथित हृदये कहेलुं के दिल्लीमां श्वेतांबर-दिगंबर एम बने धाराओना जैन पंडितोनुं एक संमेलन हतुं; तेमां दिगंबर पक्षे शताधिक विद्वानोनी उपस्थिति सामे श्वेतांबर पक्षे अमे बे-त्रण गण्यागांठ्या माणसो ज हता !

रूढिपरस्त समाज अने तेना नेताओ इच्छे या न इच्छे, पण विद्याकीय अने साहित्यिक भूमिकाए, राष्ट्रीय तेमज आंतरराष्ट्रीय स्तरे, अन्य संप्रदायो तथा धर्मोनी समकक्ष, आपणा सिद्धांतो वागेरेतुं यथार्थ अने अधिकृत प्रतिपादन कर्खुं ए आजे अनिवार्य बन्युं छे; अने ए कार्य आवा अधिकारी विद्वानो विना करवानुं रुढ माणसो माटे शक्य ज नथी. आ संदर्भमां श्री दलसुखभाईने मूलवावामां आवे तो जैन श्वेतांबर पक्षना समर्थ प्रतिनिधि तरीके तेमणे देशमां पण अने विश्वस्तरे पण आपणो पक्ष रजू कर्यो छे, एट्लुं ज नहि, पण अन्य धर्मना के संप्रदायोना लोको द्वारा थती अयोग्य के विपरीत रजूआतनो सञ्जड प्रतिवाद पण तेमणे अनेक वार कर्यो छे. वास्तवमां, तेमनी रजूआतने पडकारी शके, तेमने जूठ पाढी शके अथवा तेओनी उपस्थितिमां असत्य प्रतिपादन करी शके तेवी क्षमता ज अन्योमां न हती. सत्यनिष्ठ अने अनाग्रही एवी पारदर्शी विद्वत्तानी आ निष्पत्ति हती.

जीवनना छेल्हां बर्षोमां तेओ स्थितप्रशंभावे अने लगभग जेने साक्षीभाव कही शकाय तेवा भावे ज जात-जगत अने कुटुंब साथे वर्तता रहा होवाथी कोई विशेष लेखन के चिंतन तेमणे कर्या नथी. परंतु तेम छतां, जीवनना अंतिम दिवसो पर्यंत बौद्धिक अने मानसिक क्षमता एट्ली तो सजाग-सबल के कोइनी जूठी दलील के प्रतिपादनमां भद्रभावे जूठी हा-हा न

करी दे; अने मौनभावे जीवता होवा छतां तेमनी धाक एवी के कोई गप्पां मारतां लाखवार विचार करे.

आवा समर्थ विद्वान् सदगृहस्थनी चिरविदाय थतां जैन समाज हतो ते करतां वधु गंक बन्यो छे, निःशंक छे. जो के आ विद्वानने जैन संघे बहु स्वीकार्या नथी. जैन संघमां तेमनी छाप एक सुधारक अने नास्तिक तरीकेनी हती. खरेखर तो आवी छाप उपसाववामां आवेली एम कहेवुं वधु ठीक गणाय. आपणा समाजनी अने धुरीणोनी एक खूबी ए छे के कोइ मुस्लिम के अजैन पटेल आदि व्यक्ति जो अचानक उपाश्रये आवे, देवदर्शन के गुरुवंदन जेवी प्रवृत्ति करे, के अद्वाइ करे, तो आपणा हैयामां वधु पडतो अहोभाव उमटी आववानो, 'शासननी बलिहारी' अनुभवावा मांडवानी, अने जे ते साधु के आचार्य महागजना पुण्य-प्रभावनां गीतो गवावा मांडवानां.

हवे मुस्लिम के पटेल काई तेनो धर्म, तेनी मान्यता, तेना व्यवहारे छोडता नथी, छोडवाना पण नथी. छतां अमुक बखत कोईक गम्य के अगम्य कारणोसर आवुं बनी जाय तो समाजमां आनंद आनंद छवाई जाय.

आनी सामे श्रीमालवणियानी वात जुओ : मूळे स्थानकवासी परंपरामां तेओनो जन्म. अनाथ आश्रममां उछेर पछी पाढे स्थानकवासी साधुसंतो द्वाय ज्ञानाभ्यास. आटली भूमिका पछी पोतानी लायकात अने समाजना मोर्धीओनी परखशक्तिना प्रतापे शांतिनिकेतन सहित विविध स्थळोए अध्ययन करीने जैन विद्वान् तरीके अधिकारी बन्या. पण ते पछी मूर्तिपूजानी यथार्थता अने मुहपत्ति बांधवानी अयथार्थता आ बे वात तेमणे सौ पहेलां स्वीकारी. मुहपत्ति छोडवानी वात आ. तुलसी जेवाने मोढामोढ करी पण पोतानी जन्मजात परंपराने ज प्रहार करवानी तेमनी आ हिंमत के क्षमताने आपणे क्यारेय समजवानो तथा नवाजवानो विचार सुझां कर्यो खरो ?

वर्षोना तेमनी साथेना निकटना परिचयने परिणामे तेमनामां जोवा मळेलां मुख्य सुभग तत्त्वे आ हतां : अनाग्रह, समभाव, खराब करनासुं पण भलं करवानी वृत्ति, पोतानी भूल स्वीकारवानी तत्परता, मानवीय संवेदनशीलताथी छलकातुं हृदय, ज्ञान अने सत्य प्रत्येनी अनहद निष्ठा वर्गेरे.

तेमणे वर्षों पहलां अमुक बाबत परत्वे पोताना विचारो जाहेरमां व्यक्त करेला, जेने कारणे तेओनी भारे टीका थई हती अने ते ज कारण जीवनभर केटलाक लोकोए तेमनी साथे अस्पृश्यता जेवो पण व्यवहार कर्यो हतो. मारी तेमना विशे एक स्पष्ट छाप रही छे के तेओने जो प्रमाणे अने तर्क साथे समजाववामां आवे के तमारा आ विचारे तथा विधानो अयोग्य के भूलभरेलां छे, तो तेओ एक पळ्ठनोय विलंब कर्या विना पोतानी बात पाढी खेंची ले, पोताना उतावव्य विधानो बदल क्षमा मांगे, तथा भूल सुधासनारी पीठ थाबडे. परंतु आपणे त्यां तेमने आ प्रकारे वाळवानो उद्यम करवाने बदले तेमने ऊतारी पाडवानुं तेमज सामाजिक रीते अस्पृश्य जेवा गणवानुं ज वलण अपनावातुं रह्युं !

तेमना जीवनना एक महत्त्वपूर्ण प्रसंगनो हुं साथी तेमज साक्षी रह्यो ह्युं. भगवान महावीरदेवनी पचौसमी शताब्दीनी उजवणी निमित्ते अमदावादमां एक प्रवचनसभानुं आयोजन थयेलुं. वक्ता तरीके श्रीरिषभदास रंका आवेला. आयोजन श्रीदलसुखभाई तथा रतिलाल दीपचंद देसाईने सोंपायेलुं. आयोजक गुजरात राज्य कमिटीना वडा लेखे शेठ कस्तूरभाई लालभाई हता.

आ सभामां तोफान थवानी दहेशत हती. आयोजकोनुं ध्यान पण दोरेलुं ज. परंतु धर्म अने धर्मी जनो प्रत्ये निःशंक निष्ठा धणवता, तेमज विरोध करनारा अहिंसक विरोध ज करे, हिंसक नहि ज, तेवा ख्यालमां रमता आयोजकोए कोई तकेदारी न राखी. फलतः विरोध करनारा मित्रोए श्रीरंकानी आंखमां मरचां छांट्यां, तेमने लगभग निर्वल करी मूक्या तथा अन्य भांगफोड पण करी, ने सभा न थवा दीधी.

तत्काल पोलिस आवी. तोफानीओ पैकी ४-५ पकड़ाया पण खरा. अति व्यग्र एवी ते क्षणोमां पण जेवुं आयोजक बे य विद्वानोना ध्यान पर आब्दुं के पोलिस ४ युवानोने पकडी लई जई रही छे के तरत ज तेओ बधुं रडतुं मूकीने दोळ्या, वानने रोकी अने पकड़ायेला युवकोने 'तेओ निर्दोष छे' एम कही जामीन आपीने छोडावी मूक्या.

पाछल्थी आ अंगे तेमने पूछ्युं त्यारे तेमणे जे कह्युं ते तेमना आंतरिक प्रवाहोने समजवा भाटे बहु महत्त्वनुं छे. तेमणे कह्युं के महाराज !

अमे 'महावीरस्वामीनी अहिंसा' विशे व्याख्यान माटे भेगा थया हता. तेमां अमे अपराध करनारने पण क्षमा देवानी बातो करवाना हता. दुर्भाग्ये ते प्रवचन तो न थई शक्युं, परंतु ते साथे ज प्रवचनने आचरणमां मूकवानो मोको तो मळी गयो; एटले अमे युवानोने निर्देष गणावी छोडवी मूक्या ! कहो, अमे भगवाननी बाणीनुं पालन कर्युं ते योग्य के अयोग्य ?

बीजो एक प्रसंग बहु जाणीतो नथी. संदर्भ पचीसमी शताब्दीनो ज छे. मालवणिया पर एक दहाडो एकाएक फोन आववा शरू थया. अजुगती भाषामां शताब्दीनी उजवणीनो विरोध करवानी सलाह, अने तेम नहि थाय तो मारी नाखवानी धमकी, आ ए फोननो संदेशो. बे एक दिवस पछी फोन करनारे उग्र भाषामां कहुं के हुं तमारी हत्या करवानो छुं, तैयार रहेजो.

श्रीमालवणियाए लेश पण विचलित थया बिना तेने कहुं के तमे क्यारे अने क्यां मारूं खून करवा मागो छो ते कहो, तो हुं त्यां ते समये हाजर रही शकुं, ने तमारे धक्को न पडे. अने हुं एकलो ज आवीश, एटले बीजी चिंता न करता.

आवो जवाब अपाया पछी ए फोन आवता तो बंध थई गया, ए पण एक चमत्कार ज गणाय. परंतु, आ बातना संदर्भमां में तेओने पूछ्युं के जो फेली अनामी व्यक्तिए तमने समय आप्यो होत तो तमे शुं करत ? त्यारे पूरी गंभीरताथी तेमणे भने कहुं के महाराज ! तो हुं ते जायाए अने ते समये एकलो अवश्य जात, अने तेने घेमथी आवा खतरनाक मार्गेथी पाछो वळवा समजावत.

ज्ञानोपासनानी बात करूं तो तेमनो परिचय ज मने ज्ञानाभ्यासना संदर्भे थयो हतो. मारा अध्ययनमां आवता तर्कशास्त्रना अमुक पदार्थ मने बेठा नहि. थयुं : कोने पूछुं तो आनो उकेल मळे ? बहु मथामण पछी सूझ्युं के मालवणियाजी प्रखर दार्शनिक गणाय छे तेमने पूछावुं. में पत्र लखीने पूछाव्युं. हुं पांजरापोळ उपाश्रये. तेओ इन्हेलोजीना निर्देशक. मारा पत्रना जवाबमां एक दिवस बपैरे बे बागे तेओ मारी सामे आवीने ऊभा रह्या. कहे : हुं दलसुख. हुं तो ताजुब ! कोई दिवस जोयेला नहि,

कोई पूर्वसंदेशो नहि, आवा मोटा विद्वान् आ रीते आवी शके तेओ कोई अंदाज पण न होय. पछी तो तेओ बेठा. मारी शंकाओना उकेल समजाव्या. कहे : पत्रमां केटलुं समजावाय ? माटे प्रत्यक्ष ज आवी गयो, तमे बहु झीणवटथी भणो छो तेथी घणो गजी थाडं हुं. आ रीते ज भणजो.

आ पछी तो एवी आत्मीयता रचाई के जे तेमना पूरा परिवार साथे अद्यावधि जळवाई छे. तेमने सुधारक गणनाग केटलाक मित्रो मने घणीवार कहे के मालविण्या साथे तमारे बहु बने, खरुं ? हुं कहुं के चोक्स बने. एमनी बधी वात साथे सहमत न होईए तो पण एक मनुष्य, एक सज्जन ने एक मूर्धन्य विद्वान् तरीके तेमनी साथे सुमेळ राखवार्मा मने कोई आपदा जाणाती नथी.

इन्डोलोजी (L. D. Indology) माटे तेमने अनहद लगाव रहो. पोतानी सर्जनात्मक प्रतिभाने तेमणे इन्डोलोजीना सर्वांगीण विकास तथा प्रतिष्ठा काजे न्योछावर करी हती. मारो ए अनुभव छे के वहीवट हमेशा सर्जनात्मक उन्मेषने ग्रसी जाय छे. दलसुखभाइ आ वात जाणता अने एनो एकरर पण करता. परंतु मुनिश्री पुण्यविजयजी, पं. सुखलालजी तथा बेचरदास दोशी, तेमज शेठ कस्तुरभाईए जे आशा अने श्रद्धाथी इन्डोलोजीनुं सुकान तेमना हाथमां सोंप्युं हतुं तेने निष्फल केम जवा देवाय ? आ एकमात्र वृत्तिप्रेरित लगनथी तेमणे इन्डोलोजीने विकसाव्युं. तेनी विश्वविद्यात ग्रंथमाळा ऊभी करी. नामांकित दिग्गज विद्वानोने तेमां सकिय रस तथा भाग लेता कर्या; अने तेथी ये वधु इन्डोलोजीना प्रथमवर्गथी लईने चोथावर्ग सुधीना कर्मचारीओमां इन्डोलोजी माटे एक मातृसंस्थानी ममता तेमणे जागृत करी आपी.

इन्डोलोजीना पोताना कार्यकाळ दरम्यान ज केनेडानी टेरोन्ये युनिवर्सिटीनुं आमंत्रण मळतां एक वर्ष माटे त्यां दर्शनशास्त्रना प्राध्यापक तरीके जवानुं बन्युं. त्यां एवी ख्याति तथा चाहना ग्रास करी के युनिवर्सिटीए कायमी प्राध्यापक तरीके रहेवा ओफर करी अने आकर्षक प्रलोभनो पण आप्यां. परंतु आ विद्वान् तो विद्यामंदिरासे ज वरेला ! तेमणे ते प्रलोभननो निर्मम इन्कार कर्यो अने इन्डोलोजीने ज समर्पित रह्या. विद्याकीय नीतिमत्तानो

आ ऐतिहासिक दाखलो छे.

इन्डोलोजीमांथी सर्वथा निवृत्त थया त्यारे, मारी सरतचूक न थती होय तो, तेमनो पगार कुल ठंडरसो रूपिया हतो. निवृत्ति पछी पेशन के अन्य कोई ज लाभो नहि. निवृत्ति साथे ज आजीविकानी चिंता पण आवी पडी. संस्थानुं मकान पाढ्युं सोंपवुं अनिवार्य, तो पोतानुं घर पण होवुं अनिवार्य. विद्याने वरेला आ माणसे पोतानुं घर केवा कपरा संजोगोमां बनाव्युं छे, तेनी बजी एक कथनी छे. पण न दीनता, न पराधीनता, न अनीति, न अप्रमाणिकता. जाणे मानवीय सात्त्विक गुणोनी उमदा आवृत्ति !

केनेढानी युनिवर्सिटीए एक वर्षनी सेवाना बदलामां तेमने जीवनपर्यंत मासिक पेशन मोकल्या कर्यु. जीवन होम्युं त्यांथी काई न मळे, ने एक वर्षना बदलामां जीवनभर मळे, आ वात, स्वदेशी-विदेशी समाज-व्यवस्था वच्चेनो तेमज विद्यापुरुषो प्रत्येना सन्माननी वृत्ति-वृत्ति वच्चेनो तफावत सूचवी जाय छे.

तेमनी निवृत्ति पछीनो एक प्रसंग यादगार छे. तेओ निवृत्त थयाना खबर मळ्यां ज आचार्य श्रीतुलसीए तेमने जैन विश्वभास्ती-लाडनू माटे निमंत्रण पाठव्युं. निवास सहितनी सर्व सुविधा, संस्थामां ते इच्छे ते होद्दो, इच्छे ते वेतन तेमज पछीनी पण व्यवस्था, उपरांत दलसुखभाई जे शरत करे तेनो स्वीकार; आ प्रकारानुं ते निमंत्रण हतुं. मने तेनी जाण थई. मैं तेमने कह्युं : दलसुखभाई, तमे शुं नक्की करो छे ? जवाना ? जवाब लगभग हकारात्मक हतो. मान, विद्याकीय सर्जन - संशोधन - सन्माननी पूरी तको उपरांत जीवननिर्वाह बधुं ज सिद्ध थतुं हतुं. एट्ले सहज मन थयुं हशे, मैं तेमने कह्युं : दलसुखभाई, मारी एक वात सांभलो, तमारे लाडनू के परदेश ज्यां जवुं होय त्यां जरूर जजो. महिनो रही आवजो. वर्षमां त्रण वार जजो. परंतु तमारुं कायमी रहेठाण तो अमदावादमां ज राखजो. गुजराती छे, ने गुजरातमां रहो तो घणुं उत्तम-उचित थशे. अमारा जेवाने क्यारेक विद्यालाभ पण थशे.

तेमणे ते खखते काई उत्तर न आप्यो. परंतु पछी तेओ क्यांय गया

नहि, ने छेक सुधी अमदावादमां ज रहा.

अमे ओपेरा सोसायटीमां चातुर्मास कर्यु त्यारे तो तेओ व्याख्यान सांभळवा पण आवता. न अवायुं होय तो श्रोता-मित्र इन्दुभाई झवेरी द्वारा बधुं जाणता. ते चोमासामां संघणं कंठाभरण तप थयेलुं. ते निमित्ते भगवानने सोनानो हार चडाववानो उत्सव हतो. भारे आश्चर्य वच्चे में जोयुं के ए उत्सवमां दलसुखभाई पण सामेल हता, देगसरमां पण बधा साथे भाग लेता हता. पछी तो तेमणे ज कहुं के हुं वारंवार दर्शन माटे जतो ज होउं छुं.

आवी तो अनेक वातो छे, जेमां नास्तिक मनायेला आ विद्यापुरुषना ऊजव्य आंतर-प्रवाहोनो परिचय मळी रहे, 'अमुक माणसे तमारा माटे आवी आवी खणब वातो/निंदा करी' — आवुं तेमने कहेवामां आवे, तो तेओ निर्देष हास्य वेरता, अने कहेता के एमने मारमां एवुं लायुं हशे तो कहेता हशे. अने पछी ए ज व्यक्ति कोई काम लइने तेमनी पासे आवे तो कोई ज अरुचि, नफरत के दुर्भाव विना तेनुं काम करी आपता. आ रीते वर्तवानुं भलभला साधुपुरुष माटे पण, घणीवार, अघरुं होय छे.

आवा सज्जन विद्वाननी चिरविदायथी गुजरातनुं विद्याजगत निःशंक दख्दि बन्युं छे. भारते एक दर्शनिक प्रतिभा गुमावी छे, अने जैन समाजे एक प्रतिभासंपन्न पंडित पुरुषने खोयो छे.

